RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17, अंक-2, मार्च अप्रैल मई 2024

रासो
त्रैमासिक शोध पत्रिका
2005
॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम् ॥

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17 | अंक - 2 | मार्च-अप्रैल-मई-2024

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** – पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** – प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** – प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** – पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** – पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** – सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** – पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** – आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** – पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

बूंदी की भित्ति चित्र शैली के भवनों में चित्रण की विवेचना

उमेश कुमार
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भित्ति चित्रों का आरम्भ मानव सभ्यता के जन्मकाल से जुड़ा हुआ है। शैलाश्रयों में बनी प्रारम्भिक आकृतियाँ केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानव भावनाओं एवं सामाजिक जीवन का जीवंत दस्तावेज हैं। कोटा क्षेत्र के अलनियों के शैलाश्रय उन अनादिकालीन अभिव्यक्तियों के प्रमाण हैं, जो भित्ति चित्रण की जड़ों को आदिम इतिहास तक विस्तारित करते हैं। भारतीय शिल्प परम्परा में भित्ति चित्रों की विधा को केवल लोकावधारण नहीं, बल्कि पूर्ण शास्त्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त है। भोज द्वारा रचित 'समरांगण सूत्रधार', सोमेश्वर की 'मानसोल्लास', कुमार की 'शिल्परत्न', यशोधरा की 'जयमंगला' और 'नारद शिल्प' जैसे ग्रंथ भित्ति चित्रों के रूप, अंग, उपकरण, तकनीकी विशेषताओं तथा सौंदर्यदर्श के सिद्धान्तों की विस्तृत चर्चा प्रस्तुत करते हैं। इससे प्रकट होता है कि भारत में भित्तिचित्रण केवल स्वाभाविक आकृति-अभिव्यक्ति की परम्परा नहीं, बल्कि नियमबद्ध शास्त्रीय कला-धारा है, जिसकी तकनीकी पद्धतियाँ और रूप-सौंदर्य निश्चित किए गए थे।

बूंदी की भूमि अरावली पर्वतमाला से युक्त वह अद्भुत स्थल है जहाँ कला, सौंदर्य, संस्कृति और वीरतापरम्परा का अद्वितीय संगम मिलता है। चौहान वंशीय राजपूतों की हाड़ा शाखा द्वारा स्थापित यह नगर अपने प्राकृतिक और सांस्कृतिक रूपमाधुर्य से दर्शक को मोहित कर लेता है। पहाड़ों की गोद में बसी यह छोटी-सी काशी, विशालकाय दुर्ग, ऊँचे परकोटे, कलात्मक महल, छतरियों और मंदिरों की समृद्ध विरासत से ऐसा दृश्य प्रस्तुत करती है कि दर्शक का मन अपनी ओर खींच ही लेता है। वर्षा ऋतु में चारों ओर छाए कजरारे बादल, हरियाली में झूमते मोर, गगन में चमकती विद्युत् रेखाएँ, उड़ते बगुलों की पांतें—यह सब मिलकर 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की अनुभूति कराते हैं, और इन्हीं अनुभूतियों का परावर्तन बूंदी के भित्ति चित्रों में मिलता है।

बूंदी की भित्तिचित्र शैली का ऐतिहासिक वैभव आज भी सुरक्षित है। बूंदी के राजमहल में स्थित चित्रशाला, छत्रमहल, फूलमहल और बादलमहल अपनी दीवारों पर चित्रों का अद्भुत संसार संजोए हुए हैं। इन भित्ति चित्रों में केवल पौराणिक कथाएँ नहीं, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य, राजपूती शौर्य, सांस्कृतिक जीवन, दरबारी वैभव, स्त्रियों की अलंकरण-राजीव छवियाँ और न्याय व दया की राजकीय धारणाओं का जीवंत चित्रण दिखाई देता है। रंगों में गाढ़ा नीला, गहरा हरा, उजला पीला, लाल और स्वर्णाभ आभा का कमाल देखने वाले को मंत्रमुग्ध करता है।

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

केवल महलों में ही नहीं, बूंदी की हवेलियाँ कला धरोहर के रूप में अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। भट्टजी की हवेली, गोवर्धन सिंह की हवेली, बोहरा, मेघवानों की हवेली तथा दीवान जी की हवेली में भित्ति चित्रों का संरक्षण बूंदी के समृद्ध नागरिक-सांस्कृतिक जीवन का परिचायक है। राजमहल के वैभव से बाहर निकलकर जब कला सामान्य जीवन के भवनों—हवेलियों—में उतरती है तो वह केवल शाही संग्रह नहीं, लोकसहभागिता का दस्तावेज बन जाती है।

बूंदी के मंदिरों में भी भित्ति चित्र शैली का विशिष्ट रूप दिखाई देता है। भगवान आदिनाथ के जैन मंदिर की दीवारों पर रंगांकित रचनाएँ न केवल धार्मिक आस्था का प्रतिबिम्ब हैं, बल्कि तकनीकी प्रतिभा और कला-शास्त्र की सूक्ष्म समझ का भी प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। मंदिर कला का यह भित्तिचित्रण सौन्दर्य में राजमहलों से कम नहीं, अपितु अधिक सूक्ष्म और भावपूर्ण सिद्ध होता है।

राजकीय और धार्मिक संस्थानों के अतिरिक्त, नगर के प्रतिष्ठित कुटुम्बों के निवास-स्थानों में भी भित्तिचित्र शैली अपनी कलात्मक पहचान सुरक्षित करती है। नगर श्रेष्ठी का मकान तथा महाकवि सूर्यमल्ल मीसण का मकान इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं कि यहाँ कला न तो केवल भक्ति का साधन है और न केवल शक्ति का प्रतीक; यह यहाँ संस्कृति, विद्वता और साहित्य के संगम का रुप ग्रहण करती है। काव्य और चित्र का यह अद्वैत बूंदी की सांस्कृतिक चेतना को साकार करता है।

भित्ति चित्र शैली के प्रसार का एक महत्त्वपूर्ण आयाम बूंदी के दुर्गों और परकोटों में भी मिलता है। दुगारी और इन्द्रगढ़ के किलों की दीवारों पर बने चित्र इस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि भित्तिचित्रण केवल महलों की शोभा के लिए नहीं, बल्कि राज्य की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक था। यहाँ शस्त्र-शक्ति और शौर्य की कल्पना, प्राकृतिक दृश्यों की सौम्यता और जीवन के लोक-रस का सम्मिलित स्वरूप चित्रों में मनोहारी रंग-रेखाओं से उकेरा गया है।

बूँदी और उसके आस-पास का सम्पूर्ण प्रदेश अपने स्थापत्य, दुर्ग-रचना तथा चित्र-परम्परा के कारण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इनमें तारागढ़ का किला विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसे बूँदी का अभेद्य दुर्ग कहा जाता है। समुद्रतल से लगभग 1600 फीट ऊँचाई पर स्थित यह दुर्ग देखने में जितना भव्य है, उतना ही सामरिक दृष्टि से भी सुदृढ़। इसका निर्माण राव नरपाल ने संवत् 1411 में युद्ध-रक्षा की दृष्टि से करवाया था। यही वह ऊँचा स्थल है जिसके नीचे राजमहल और सम्पूर्ण बूँदी नगर बसा हुआ है। राजमहल के भीतर अनेक भवन, दीर्घाएँ और कक्ष हैं और इन्हीं दीवारों तथा छतों पर बूँदी की भित्ति-चित्र परम्परा अपनी संपूर्ण कलात्मकता के साथ अंकित है। इन प्राचीरों में सर्वाधिक उल्लेखनीय स्थान चित्रशाला का है जो बूंदी चित्रकला की आत्मा और केंद्र है।

चित्रशाला :- चित्रशाला का निर्माण राव राजा उम्मेदसिंह (1749-1773) के शासनकाल में हुआ। यह चित्रशाला केवल भित्तिचित्रों की अलंकारिकता का स्थल नहीं, बल्कि बूंदी चित्रशैली की परिपक्वता और वैभव का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ऐसा स्थान दुर्लभ ही होगा जहाँ दीवारों, कोनों, छतों, महराबों, स्तम्भों और दीर्घाओं पर चित्रांकन न हुआ हो। राजस्थान के अनेक रियासतों में चित्रशालाएँ बनीं, परन्तु बूंदी की चित्रशाला अपने भव्य विस्तार, विषय-विविधता और सूक्ष्मता में अनुपम है। सीढ़ियों से ऊपर पहुँचते ही प्रथम भित्ति पर भगवान रंगनाथ का चित्र दृष्टिगत होता है। उसके ऊपर नंदी और हाथी आमने-सामने बनाये गये हैं, जो

आस्था तथा भव्यता के द्वैत को साथ लिए हुए प्रतीत होते हैं। यहीं से चित्रों का संसार दर्शक की चेतना में प्रवेश करता है।

आगे बढ़ते ही विशाल बरामदा आता है जिसकी दक्षिण, पश्चिम तथा उत्तर–तीनों भित्तियाँ चित्रमय हैं। दक्षिणी भित्ति पर तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण चित्र हैं। प्रथम चित्र गणगौर विसर्जन का है, जिससे स्पष्ट होता है कि बूंदी नगर सामाजिक-धार्मिक उत्सवों का केंद्र रहा है। चूंकि यहाँ दो प्रमुख मेले आयोजित होते हैं–तीज और गणगौर–इसलिए भित्तियों में पार्वती-पूजन, नारी-श्रृंगार और सांस्कृतिक उल्लास का सुंदर चित्रण हुआ है। दूसरा चित्र दरबार-दृश्य का है, जिसमें राजपूत सभ्यता की प्रतिष्ठा, न्यायशीलता और सामाजिक व्यवस्था का रूप उभरता है। तीसरा चित्र हिन्डोल-क्रीड़ा का है जिसमें युवतियाँ झूले में झूलती हुई दर्शायी गई हैं। श्रावण मास की अनुपम प्राकृतिक स्थिति, कृष्णभक्ति-परम्परा का माधुर्य और लोक-साँस्कृतिक जीवन–सब कुछ इस भित्ति में सजीव रूप में दिखाई देता है।

बरामदे के सामने, पश्चिमी भित्ति की ओर दृष्टि करने पर तीन द्वार दिखाई देते हैं। इन तीनों के ऊपरी खण्ड में दरबारी सभाओं के चित्र अंकित हैं, जो राजकीय वैभव और कलात्मक संस्कृति के प्रमाण हैं। प्रथम द्वार से भीतर प्रवेश करने पर कक्ष का अंधकार प्रारम्भ में चित्रों को ढँक देता है, पर कुछ क्षण बाद भित्ति चित्र पूरे यथार्थ के साथ उभर आते हैं। द्वार के ऊपर गणेश, शिव, पार्वती और एक ओर लक्ष्मी का समूह चित्र है। गेरू रंग में गणेश की आकृति की गहराई और ताजगी असाधारण है। लक्ष्मी पर दो हाथी जल उछालते हुए दर्शाये गये हैं–एक हाथी लाल और दूसरा पीला। रंगों का यह संयोजन बूँदी शैली की विशेषता है।

इस कक्ष की बायीं भित्ति पर उद्यान का मनोरम दृश्य है, वहीं एक हिस्से में राव संगीत और नृत्य की प्रस्तुति का आनन्द लेते हुए दिखाये गये हैं। ठीक सामने वाली दीवार पर आयताकार पैनल में कृष्ण-लीला के बहुविध प्रसंग संयोजित रूप से अंकित हैं। चीर-हरण, पोलो-क्रीड़ा, चार-भुजाधारी रूप, गायों का समूह, यमुना तट, मंदिर, माखन चोरी, रासमण्डल, चंद्र-दर्शन, हिन्डोले में झूलने के दृश्य–ये सब एक ही पैनल में अनूठी समन्वित तकनीक से दर्शाये गये हैं। यह पैनल बूंदी कलाकारों के कौशल, कल्पना-शक्ति और विषय-विस्तार का उत्कृष्ट उदाहरण है।

जब दर्शक कक्ष से बाहर निकलकर फिर बरामदे में लौटता है तो चित्रित भित्तियाँ पुनः मन मोह लेती हैं। पश्चिमी दीवार के ऊपरी भाग में एक विशाल सवारी-दृश्य अंकित है जो लगभग पूरी लंबाई तक फैला हुआ है। इसी बरामदे में नायिकाओं के विविध रूप दिखते हैं–श्रृंगार करती हुई, सुरापान करती हुई, चकरी चलाते हुए, हिरन के साथ, पक्षी हाथ पर लिये, स्नान के पश्चात्, प्रतीक्षा करती हुई, हुक्का पीती हुई या कबूतर उड़ाते हुए। विषयों में विपुलता और जीवन रस में परिपूर्णता, यही बूंदी शैली का सौंदर्य है। रानियों का घोड़े पर बैठकर सुअरों और शेरों का शिकार करते हुए चित्रण भी मिलता है, जो साहस और सुसंस्कृति के दुर्लभ समन्वय को दर्शाता है। वहीं दरबारी समारोह भी अत्यन्त सजीव रूप में उकेरे गये हैं।

बरामदा समाप्त होते ही तीसरा बरामदा आरम्भ होता है, जो पूर्व दिशा की ओर जाता है। यही पर महाराजा उम्मेदसिंह की पूज्य पावड़ियाँ रखी हुई हैं। उत्तरी विशाल भित्ति पर रामकथा का का संपूर्ण चित्रण अद्भुत ढंग से किया गया है। रामजन्म से लेकर राम-रावण युद्ध तक, लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार

की घटनाओं का कलात्मक संयोजन दिखाई देता है। राम–सीता विवाह, बाजारों का दृश्य, सामाजिक गतिविधियाँ एवं श्रद्धा का भाव—सब कुछ यहाँ संपूर्णता के साथ प्रस्तुत है। इसी भित्ति के अन्तिम सिरे पर एक ऐसा आधुनिक चित्र भी अंकित है, जिसकी संरचना और रचना-पद्धति को देखकर चित्रण की नवीन प्रवृत्ति की स्मृति ताजा हो जाती है।

छत्र महल :– छत्र महल बूँदी के राजमहल समूह का वह महत्वपूर्ण अंग है, जहाँ पहुँचने के लिए दो मुख्य द्वारों से होकर जाना पड़ता है। प्रवेशद्वार, जिसे हाथी पोल कहा जाता है, अपने दोनों ओर स्थापित विशाल पत्थरों के दो हाथियों की प्रतिमाओं के कारण ऐतिहासिक महत्व रखता है। ये प्रतिमाएँ राव राजा रतनसिंह के काल में, लगभग 10वीं शताब्दी के आरम्भ में निर्मित हुई मानी जाती हैं। इस द्वार की ऊपरी दिशा में, दीवाने–आम के सामने स्थित भवन ही छत्र महल के नाम से प्रसिद्ध है। इस अद्भुत निर्माण का श्रेय राव राजा छत्रसाल (1631 ई.) को दिया जाता है। महल की संरचना जितनी सुंदर है, उतनी ही अद्वितीय है इसकी भित्ति-चित्र कला जो परम्परा, सौन्दर्य, और संस्कृति का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है।

बूँदी राज्य के राजमहलों में छत्र महल को स्थापत्य की उत्कृष्टता के रूप में देखा जाता है। इस भवन में संगमरमर के दस पहलूदार स्तम्भ स्थापित हैं, जिनकी कलात्मक छटा आमेर के दीवाने–ख़ास की याद दिलाती है। ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण राव छत्रसाल (1631–1665 ई.) के समय में ही पूरा हुआ। छत्र महल की दीवारों पर बने चित्रों में शिकार के दृश्य, हाथी पर बैठे राजा, तथा वीरता के विविध प्रसंग देखने को मिलते हैं। इन चित्रों के माध्यम से युद्धकला, शौर्य, राजसी जीवन तथा लोक–संस्कृति का समन्वित चित्रण हुआ है।

छत्र महल का प्रारम्भ एक विशाल बरामदे से होता है। यह बरामदा केवल स्थापत्य का हिस्सा ही नहीं, बल्कि चित्रकला का अद्भुत संग्रहालय प्रतीत होता है। बरामदे के अधिकांश आलिंद (छोटे कमरे या कटघरे) चित्रांकित हैं। ये अलिंद लगभग 2 फुट बाय 3 फुट के आकार के बने हुए हैं, जिनमें कहीं एक या दो आकृतियाँ हैं, तो कुछ अलिंदों में चार–चार आकृतियाँ भी अंकित दिखती हैं। इन चित्रों में सोने के रंग का काम इतना सूक्ष्म और गाढ़ा है कि वह आज भी अपनी चमक बरकरार रखे हुए है। रंगों की गहराई और आकृतियों की स्वाभाविकता इस बात का प्रमाण है कि चित्रकार की कला अत्यंत परिपक्व थी।

फूल महल और बादल महल—ये दोनों कमरे चित्रशाला के सुन्दरतम उदाहरण हैं। इन्हें बूँदी के स्थानीय निवासियों द्वारा जनाना महल के नाम से भी पुकारा जाता है। इस जनाना महल में भित्ति–चित्रों की विविधता और सूक्ष्मता अद्वितीय है। बादल महल के स्थापत्य में विशेष बात यह है कि इसकी ऊँचाई इसकी लम्बाई और चौड़ाई के अनुपात में अधिक है, जिससे इमारत में एक प्रकार की ऊँचाई–प्रधान भव्यता झलकती है। इस महल में स्थापत्य पर यूरोपीय प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। महल के आकार और भित्तियों की ऊँचाई के अनुसार ही चित्रकारों ने चित्र–विषय चुने हैं।

बादल महल के चित्रों पर विदेशी प्रभाव अवश्य दिखाई देता है, किन्तु उनके विषयवस्तु अविभाज्य रूप से भारतीय हैं। इन चित्रों में कृष्ण का श्रृंगार, राजा द्वारा संगीत–सुनना, रानियों की झूला–क्रीड़ा, तथा कंस के धराशायी होने का प्रसंग प्रमुखता से पाया जाता है। चित्रों में अलिंदों के भीतर श्रृंगार–रस का सौन्दर्य प्रबल रूप से झलकता है। एक अलिंद में रानी का शस्त्र युद्ध का दृश्य अत्यन्त आकर्षक है, जिससे यह सिद्ध होता है कि बूँदी कला केवल प्रेम–श्रृंगार तक सीमित नहीं, बल्कि युद्धकला और शौर्य के दृश्य भी

समेटे हुए है।

इसी प्रकार शिवजी का दरबार, शेर का शिकार, हाथी और गैंडे की लड़ाई, तथा हिरणों का शिकार— ये सब विषय चित्रकार की विविध कल्पना-शक्ति और कौशल के द्योतक हैं। चित्रण की यह परम्परा भित्ति-चित्रों को केवल सजावट नहीं बनाती, बल्कि सामाजिक जीवन, धार्मिक भाव, राजसी परम्परा और प्रकृति का जीवंत दस्तावेज बनाती है। बूँदी की चित्रकला के इस स्वर्णिम अध्याय में छत्र महल, फूल महल और बादल महल के भित्ति-चित्र अपनी गरिमा, कलात्मकता, रंगीनता और ऐतिहासिक महत्त्व के कारण अमर हो जाते हैं।

हवेलियाँ :- बूँदी की सांस्कृतिक विरासत केवल महलों और मंदिरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि हवेलियों की दीवारें भी इस समृद्ध भित्ति-चित्र परंपरा की वाहक रही हैं। बूँदी में स्थित अनेक हवेलियाँ अपनी अप्रतिम चित्र-सज्जा के कारण कलात्मक दृष्टि से उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने ऊँचे राजप्रासाद। इनमें 'भट्ट जी की हवेली' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह हवेली चौमुखा बाजार से होकर चूड़ी बाजार को पार करने के उपरांत भाभाइयों के चौक में स्थित है। यहाँ की भित्तियों में चित्रण अपेक्षाकृत सीमित मात्रा में है, किंतु जो कुछ संरक्षित है वह गुणवत्ता और कलात्मक परिपक्वता के कारण महत्त्वपूर्ण है। हवेली में प्राय: तीन कक्षों की दीवारें चित्रित पाई जाती हैं। इन चित्रों के विषयवस्तु में राजदरबार के भव्य दृश्य, मनोरंजन के प्रसंग, शिकार-लीला, नायिका-भेद के दृश्य तथा कृष्ण-लीला के मधुर प्रसंग शामिल हैं। चित्रों में प्रयुक्त रंग, रेखांकन और संसाधन दर्शाते हैं कि बूँदी के कलाकार राजसी और लोक—दोनों संस्कृतियों के गहरे अवलोकन में समर्थ थे।

इसी प्रकार 'गोवर्धन सिंह जी की हवेली' बूंदी की प्राचीनतम कलात्मक इमारतों में गिनी जाती है। यह चौमुखे से आगे, गूजरवाड़े के मुहल्ले में स्थित है। यद्यपि समय के प्रवाह ने अनेक भित्तियों को क्षतिग्रस्त किया है, फिर भी लम्बे बरामदे की भित्तियों पर बने चित्र आज भी अपने सौन्दर्य और ऐतिहासिकता के कारण अद्भुत प्रतीत होते हैं। इन चित्रों के विषय तत्कालीन राजवंशों के दरबार, शाही सवारी और युद्धकला से लेकर धार्मिक पूजा-पाठ, देवी-देवता और वन्य पशुओं के शिकार तक विस्तृत हैं। हाथी-शेर की लड़ाई तथा हाथी-गैंडे की लड़ाई जैसे दृश्य केवल चित्रांकन नहीं, बल्कि उस युग के जीवन मूल्यों, साहस, शक्ति तथा वन्य-जीवन के ज्ञान का सत्य प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं।

इन भित्तियों में राजाओं के व्यक्तिगत चित्र भी मिलते हैं, जिनसे उनकी साम्राज्यिक प्रतिष्ठा, व्यक्तित्व, वस्त्र-शैली और शाही परंपराओं का अनुमान लगाया जा सकता है। स्थानीय सामाजिक जीवन का चित्रण भी इन हवेलियों में स्थान पाता है। तीज और गणगौर जैसे प्रमुख लोक-उत्सवों का चित्रण लोक-संस्कृति की जीवंतता का द्योतक है। एक ही फ्रेम में धार्मिकता, आनंद, भ्रातृत्व और सौंदर्य का अद्भुत सम्मिश्रण दिखाई देता है। इसी प्रकार अलंकरणात्मक चित्रों के बीच अनेक अलिंदों में राधा-कृष्ण के ललित दृश्य अंकित हैं, जिनमें प्रेम, भक्ति और अध्यात्म के साथ सौन्दर्य का सहज स्पर्श मिलता है।

मंदिर :- नाहर के चौहट्टे के निकट स्थित संकरी गली में ऊपर की ओर बढ़ने पर भगवान आदिनाथ का जैन मंदिर अवस्थित है। इस मंदिर की दोनों भित्तियों पर भित्ति चित्र अंकित हैं, जिनका केन्द्र भगवान आदिनाथ का जीवन और चरित है। इन चित्रों की कलात्मकता को गोवर्धन सिंह जी की हवेली तथा भट्ट जी की हवेली के भित्ति चित्रों के समकक्ष माना जा सकता है, क्योंकि विषय-वस्तु भिन्न होने पर भी शैलीगत

रूप में समान सौन्दर्य, रंग योजना और रेखांकन दिखाई देता है।

मंदिर की पहली भित्ति पर भगवान आदिनाथ के जन्म से संबंधित दृश्य अत्यन्त भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। दूसरी भित्ति में उनके ज्ञानोपार्जन और यात्राओं से संबंधित प्रसंग चित्रित हैं, जिनमें कथा के क्रम और भावाभिव्यक्ति को सुसंगत रूप में दर्शाया गया है। मंदिर की उत्तरी भित्ति भगवान के मोक्ष से जुड़े प्रसंगों को प्रस्तुत करती है, जहाँ कला और अध्यात्म का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है।

यद्यपि चित्रों की विषय-वस्तु पूर्णतः जैन धर्म के सिद्धांतों और परम्परा पर आधारित है, तथापि चित्रांकन की शैली में बूँदी की विशिष्ट चित्र-परम्परा का ही प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, और इस कारण इन चित्रों में किसी प्रकार का शैलीगत भेद नहीं दिखाई देता। इसमें वही कोमल रंग, सूक्ष्म रेखाएँ, सजावटी विन्यास और शांत भाव-प्रधान सौन्दर्य दिखता है, जो बूँदी शैली की अन्य प्रसिद्ध हवेलियों और महलों में भी पाया जाता है।

मकान :- चौमुखे से आगे नागदी बाजार में स्थित सेठ देवराज जी भण्डारी का मकान बूँदी की पुरानी चित्रकला परम्परा का महत्त्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है। यह दो मंजिला भवन है। मकान के बिल्कुल निचले भाग में एक दुकान स्थित है, जिसकी दो भित्तियों पर पूर्व समय में सवारी तथा हाथियों की लड़ाई के चित्र स्पष्ट रूप से देखे जा सकते थे। वर्तमान स्थिति में इन भित्तियों पर चूने की गाढ़ी परत चढ़ा दिए जाने से वे चित्र लगभग अप्राप्य हो गए हैं, किंतु उनका ऐतिहासिक और कलात्मक महत्व अभी भी चर्चा में बना हुआ है।

इसी दुकान के भीतर से ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ बने हुए स्थान तक पहुंचाती हैं। प्रथम तल पर किसी भी प्रकार का भित्ति चित्र दिखाई नहीं देता, किंतु दूसरे तल पर स्थित एक पूरा कक्ष अत्यंत सुंदर चित्रकारी से परिपूर्ण है। भवन की आयु लगभग एक सौ तीन वर्ष आंकी जाती है, जिससे इस कक्ष की चित्रकला का ऐतिहासिक महत्व और स्पष्ट होता है।

दूसरे तल की भित्तियों पर विभिन्न कथानक चित्रित हैं। एक चित्र में ढोला-मारू विराजमान हैं, जो राजस्थान की लोकप्रिया प्रेमकथा का उत्कृष्ट कलात्मक रूप है। एक अन्य चित्र में राम और सीता को चौकी पर मसनद के सहारे बैठे दर्शाया गया है। वहाँ हनुमान चंवर डुलाते हुए दिखाई देते हैं, जो भक्ति एवं सेवा के भाव को अत्यंत मनोहारी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इसी कक्ष में गणगौर की एक मनोरम छवि भी अंकित है, जो बूँदी की सांस्कृतिक परम्परा और धार्मिक विश्वासों को कलात्मक रूप में अभिव्यक्ति देती है। इस प्रकार सेठ देवराज जी भण्डारी का यह मकान, अपनी संरचना और भित्ति चित्रों के माध्यम से, बूँदी क्षेत्र की प्राचीन कला, लोकमानस और धार्मिक आस्थाओं का एक जीवंत दस्तावेज प्रतीत होता है।

दुगारी :- दुगारी बूँदी राज्य के सामंती गढ़ों में प्रमुख स्थान रखता था। आज यह राजस्थान राज्य के बूंदी जिले में नैनवां तहसील के अंतर्गत स्थित है। बूंदी के राव उम्मेदसिंह जी के हाड़ा वंशजों की यह प्राचीन जागीर थी। नैनवां से इसकी दूरी लगभग 10 किलोमीटर दक्षिण दिशा में बताई जाती है, जहाँ तक पहुँचने के दो मार्ग उपलब्ध हैं—एक नैनवां से और दूसरा बूंदी नगर से।

यहाँ के दुर्ग और मन्दिर स्थापत्य तथा चित्रकला के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दुगारी महल के निकट स्थित एक मंदिर में बूंदी, कोटा तथा जयपुर की शैली से प्रभावित भित्ति चित्र अंकित हैं, जो

अब क्षरण के कारण अपने अंतिम चरण में दिखाई देते हैं। दुर्ग दुगारी गाँव के दक्षिण में ऊँची पहाड़ी पर अवस्थित है। वर्तमान में दुर्ग का मार्ग केवल पिछली ओर से ही सुगम है। द्वार पर लकड़ी का विशाल द्वार देखने योग्य है। प्रवेश करते ही एक विशाल आँगन मिलता है, जहाँ से महल के अवशेष दिखाई देते हैं। इसी स्थान से दक्षिण दिशा में स्थित द्वार के माध्यम से भित्तिचित्रों के अद्भुत भंडार—सीतारामजी के मंदिर—तक पहुँचा जाता है।

इस मंदिर की रचना संभवतः अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभकाल की प्रतीत होती है। यहाँ शिव परिवार की भी सुंदर चित्रांकन परंपरा दृष्टिगोचर होती है। रामकथा का अंकन राजस्थान की अन्य शैलियों, जैसे मेवाड़ और बूंदी में भी मिलता है, किंतु वहाँ कथा विषय का आधार वाल्मीकि रामायण है। जबकि दुगारी के सीताराम मंदिर में चित्रित कथा तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' पर आधारित है। हनुमानजी की आकृति का निर्माण विशेष मनोयोग से किया गया प्रतीत होता है। कहीं-कहीं कृष्णजी को घोड़े पर आरूढ़ रूप में अंकित किया गया है। मेहराबों में वामन अवतार, नरसिंह अवतार, राम-रावण युद्ध तथा राधा-कृष्ण के चित्र आकर्षक रूप में उकेरे गए हैं।

बरामदे की पूर्व दिशा में स्थित अधूरे चित्रण में स्त्री के कुंजवन के चित्र में अद्भुत कल्पना शक्ति का परिचय मिलता है—इस आकृति का मुख स्त्री का, कंधों पर पंख, पूँछ के स्थान पर सर्प और पंजे पक्षी के सिरों जैसे बनाए गए हैं। इन चित्रों की कलात्मक क्षमता एवं मौलिकता के बावजूद उनका संरक्षण न हो पाने से कला-संपदा धीरे-धीरे नष्ट होने की आशंका झलकती है।

दर्शन में असुविधा न हो, इस हेतु चित्रकारों ने भित्तिचित्रों के शीर्षक सुलिपि में चित्रों के ऊपर अंकित किए हैं—जैसे सुरसा, हनुमान, सीता-हरण, वनगमन, यज्ञोपवीत, दशरथ का दाह संस्कार, केवट प्रसंग, राम जन्म, भरत-शत्रुघ्न मिलन आदि। कुछ शीर्षक हाड़ौती भाषा में भी दिए हुए हैं—जैसे 'राजतिलक को भाच', 'फाग को भाव', 'भरत शत्रुघ्न राम सू मिलया'। रामायण के साथ-साथ महाभारत, गरुड़ आदि विषयों का भी चित्रांकन कुशलता से किया गया है।

दुगारी के भीतर स्थित एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल है हवा महल या बादल महल, जिसके पास से ही एक पथ सुपारी महल की ओर जाता है। सुपारी महल में 20म12 फीट का एक चौड़ा आँगन है, जिसकी एक ओर निकली हुई अंरगनी भित्ति चित्रों से सज्जित है। यहाँ 10म10 फीट के दो कक्ष भी स्थित हैं जिनकी समस्त भित्तियाँ चित्रों से भरपूर हैं। इन कक्षों में कृष्ण-लीला से संबंधित चित्र अत्यंत सुंदर हैं।

आँगन के बाहर की ओर निकली बालकनी में मेहराबों के आकार में चित्र निर्मित किए गए हैं। यहाँ चित्रों में राजा इन्द्रसाल, पालकी में राम-सीता-हनुमान, और बाण छोड़ते हुए महाराज के साथ कृष्ण-लीला के प्रसंग अंकित हैं। सुपारी महल के अंतिम कमरे में, जो लगभग 12म10 फीट का है, खिड़कियों के मध्य भाग में आठ नीचे और आठ ऊपर इस प्रकार कुल सोलह अलिंद हैं। इसी कक्ष में राग-रागिनियों के 32 चित्र मध्य स्थान पर चित्रित हैं। ये चित्र लघुचित्र शैली के बराबर आकार में हैं। इनके ऊपर मेहराबदार लगभग आठ फुट लंबाई के चार पैनल भी चित्रित हैं, जिनमें कृष्ण-लीला का अलौकिक चित्र दिखाई देता है—यहाँ भगवान गणेश कृष्ण के रथ को सारथी रूप में हाँकते हुए चित्रित हैं। इस स्थान से दुर्ग के भीतर आगे जाते हुए जनाना महल तक पहुँचा जा सकता है।

सारत: बूँदी और दुगारी की भित्तिचित्र परंपरा धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक और सामाजिक जीवन का एक जीवंत दर्पण है, जो भारतीय चित्रकला को अपनी विशिष्ट पहचान प्रदान करती है और सम्पूर्ण क्षेत्र की कलात्मक विरासत को अमर बनाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डा. बद्री नारायण वर्मा, कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1980*
2. *डा. अलका श्रीवास्तव, हाड़ौती चित्रकला में नारी अंकन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1985*
3. *डा. रमेश सहाय सक्सेना, बून्दी के भित्ति चित्रों का अभिलेखात्मक अध्ययन, राजस्थान विद्यापीठ प्रकाशन, उदयपुर, 1978*
4. *शीला सक्सेना, राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 1979 (सम्बन्धित लेख)*
5. *बी. एन. टण्डियाल, बून्दी गजेटियर, राजस्थान सरकार प्रकाशन, जयपुर, 1960*
6. *डा. जयसिंह नीरज, बून्दी गजेटियर, राजस्थान सरकार प्रकाशन, जयपुर, 1960*
7. *'आकृति', राजस्थान ललित कला अकादमी प्रकाशन, जयपुर, 1983*
8. *रामगोपाल विजयवर्गीय, राजस्थान की चित्रकला, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 1968*
9. *डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास, किताब घर प्रकाशन, वाराणसी, 1970*
10. *मोहन लाल गुप्ता, 'राजस्थान पत्रिका ', जयपुर, 12 मार्च 1986 (लेख)*
11. *डा. आर. एस. सक्सेना, बून्दी के भित्ति चित्रों का अभिलेखात्मक अध्ययन, राजस्थान विद्यापीठ प्रकाशन, उदयपुर, 1978*
12. *जैमिनी कौशिक बरूआ, दुगारी के भित्ति चित्र, आनन्दीलाल पौद्दर स्मृति पुष्पी, जयपुर, 1975*
13. *बृजमोहन सिंह परमार, इतवारी पत्रिका, जयपुर, 4 मई 1975 (लेख)*
14. *जगदीश सिंह गहलौत, बून्दी राज्य का इतिहास, राजस्थानी साहित्य मंडल, जयपुर, 1965*
15. *बृजमोहन सिंह परमार, म्यूरल ऑफ हाड़ौती—कल्चरल हैरिटेज ऑफ हाड़ौती, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1982*
16. *बृजमोहन सिंह परमार, राष्ट्रदूत साप्ताहिक, जयपुर, 1983 (लेख)*
17. *जैमिनी कौशिक बरूआ, राजस्थान के मानचित्र पर विहंगम दृष्टि, आनन्दीलाल स्मृति प्रकाशन, जयपुर, 1976*
18. *बृजमोहन सिंह परमार, राष्ट्रदूत, जयपुर, 1984 (लेख)*
19. *कुक्का, बूँदी की भित्तिचित्र परम्परा, जयपुर, 1982*
20. *वी. एस. अग्रवाल, 'राजस्थान की लघु चित्रकला ', भारतीय विद्या भवन, मुंबई, 1965*
21. *एन. सी. मेहता, राजस्थान पेंटिंग, ओरिएंटल पब्लिशिंग, वाराणसी, 1971*
22. *डॉ. जी. एन. शर्मा, 'बूँदी की कलात्मक उपलब्धियाँ ', राजस्थान प्रकाशन, अजमेर, 1978*